प्रकृति प्रेरणा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रकृति मानव की चिर सहचरी है। मनुष्य ने जब से आंखें खोली प्रकृति का प्रांगण उसके लिए खुला हुआ था। प्रकृति मानव के विकास में बहुत सहायक है। प्रकृति के प्रत्येक उपादान मानव के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। सम्पूर्ण सृष्टि, सम्पूर्ण पर्यावरण और चौरासी लाख जीवन योनियों के उत्पत्ति स्थान को प्रकृति कहते हैं। प्रकृति पंचभूतात्मक है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पांचों तत्त्व प्रकृति का निर्माण करते हैं। पृथ्वी हमारी माता है और हम पृथ्वी के पुत्र हैं, ऐसी धारणा भारत के प्राचीन ग्रन्थों में व्यक्त की गई है। पृथ्वी चराचर प्राणियों का आधार है। किन्तु आज का मानव पृथ्वी को ही प्रदूषित करने में लगा हुआ है। प्राचीनकाल में हमारे देश में इन पांचों तत्त्वों की पूजा होती थी। आज भी प्रकृति की पूजा होती है। प्रकृति की पूजा से प्रकृति प्रसन्न होती है। प्रकृति के अनुकूल रहने से सर्दी, गर्मी और वर्षा का चक्र समान रूप से चलता रहता है। जब प्रकृति समव्यवहार करती है तो सभी जीव प्रसन्न होते हैं। प्रकृति मानव को प्रसन्न रहने की प्रेरणा देती है। हमारे देश में जितने भी प्राकृतिक स्थल हैं वहां पर सैलानी भ्रमण के लिए जाते हैं और प्रकृति का खूब आनन्द लेते हैं। प्रकृति का हरा–भरा आंचल मानव को प्रसन्नता की प्रेरणा देता है। सहज जीवन जीने की प्रेरणा प्रकृति ही देती है। आजकल लोग इतना अप्राकृतिक जीवन जी रहे हैं। घर में बैठकर एयरकन्डीशन में बैठकर अप्राकृतिक वस्तुओं का सेवन करते हैं और अस्वस्थ रहते हैं। गांव के लोग वृक्षों की छाया के नीचे प्राकृतिक हवा का सेवन करते हैं और स्वच्छ रहते हैं। शहरों की वायु वाहनों के आगमन से प्रदूषित हो जाती है। श्वांस प्रश्वास के लिए भी आक्सीजन नहीं मिल पाता। प्रकृति ही ऑक्सीजन के रूप में प्राण तत्त्व प्रदान करती है। प्राण शक्ति को संचालित करने के लिए शुद्ध हवा मिलना बहुत आवश्यक है। बड़े–बड़े शहरों में रहने वाले लोग मंसूरी, शिमला, मनाली और कश्मीर क्यों जाते हैं? वो इसलिए जाते हैं कि प्रकृति के वास्तविक स्वरूप का दश्र्न हो सके। प्रकृति के साथ रहने से मन प्रसन्न हो जाता है। प्रकृति प्राकृतिक औषधियों का खजाना है। जड़ी–बुटियों के सेवन से शरीर स्वस्था रहता है। पशु–पक्षी किसके सहारे

जीवित रहते हैं? निश्चित ही प्रकृति ही उनका पालन–पोषण करती है। प्राकृतिक प्राणी प्रकृति का उपयेाग करके स्वस्था प्रसन्न रहते हैं। प्रकृति के नियमों का पालन करने से मनुष्य भी अस्वस्थ नहीं होता। नदी, पहाड़, झरने, वृक्ष, औषधियां प्रकृति के अमूल्य खजाने हैं। प्रकृति अपने लिए नहीं बल्कि मानव के लिए यह खजाना देते हैं। प्रकृति यह शिक्षा देती है कि दूसरों के लिए जीवन जीओ। नदियां अपना जल स्वयं नहीं पीती, बल्कि दूसरे प्राणी ही जल का उपयोग करते हैं।

आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी, इन पंच महाभूतों के विशेष गुण क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध है। सृष्टि का इतिहास क्या है, मानों चौबीस तत्वों का खेल है, जो प्रकृति से प्रारंभ होता है और पंचभूतों से समाप्त होता है। संसार न तो परमाणुओं के अंधाधुंध संयोग का फल है, न अंध कारण–कार्य शक्तियों का निरर्थक परिणाम है। सृष्टि एक विशेष प्रयोजन से होती है। इसका उद्देश्य है नैतिक या आध्यात्मिक उन्नति का साधन होना। आकाश तत्व, पंचतत्वों में सबसे अधिक उपयोगी एवं प्रथम तत्व है। इसको आकाश और शून्य भी कहते हैं। जिस प्रकार महत्तत्व (ईश्वर) निराकार किन्तु सत्य है। उसी प्रकार आकाश तत्व निराकार भी है और सत्य भी है। आकाश तत्व कभी नाश नहीं होता–महाप्रलय में भी नहीं। आकाश विशुद्ध तथा निर्विकार होता है। अतः उससे हमे विशुद्ध एवं निर्मलता (आरोग्य) की प्राप्ति होती है। वायु तत्व, पंच तत्वों में दूसरा आवश्यक तत्व है। जल ही जीवन है और वायु प्राणियों का प्राण ही है। एक मिनट भी हमको वायु न मिले हम घबरा उठते है। सारे शरीर में बेचैनी फैल जाती है अधिक देर तक वायु न मिले तो प्राणान्त हो जाता है। अतः यह मनुष्य मात्र का अत्यन्त आवश्यक भोजन तत्व है। प्रतिदिन हम जितना भोजन करते हैं और जल पीते हैं उससे लगभग सातगुना वायु भक्षण करते हैं। अग्नि, सृष्टि के उपादान पंच तत्वों में तीसरा उपयोगी तत्त्व है। परन्तु दृष्ट तत्त्वों (अग्नि–जल तथा पृथ्वी) में प्रमुख दृश्य तत्व अग्नि ही है। अग्नि को अग्निदेव मानकर उनकी पूजा अर्चना का विधान शास्त्र कारों ने बताया है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र 'अग्नि मीडे पुरोहितम्' आदि में ईश्वर के प्रत्यक्षरूप अग्नि की ही प्रार्थना की गयी है। सांसारिक जीवन का तो आरम्भ ही जल से हुआ है। जो वैज्ञानिक विकासवाद, पौराणिक अवतारवाद तथा औपनिषादिक सृष्टिवाद, तीनों से सिद्ध है। अतः इसी जल से हमारा पालन

पोषण भी सम्भव है। बिना जल के हम जी नहीं सकते। पृथ्वी को धरा कहते हैं। मुनष्य इसे खोद–खाद करके और इस पर कचरा फैलाकर जो अपराध करते हैं, उन्हें क्षमा करने से इसे क्षमा कहते हैं। इसके गर्भ में कई रत्न और खनिज पदार्थ भरे रहने से इसे रत्नगर्भा, वसुधा, वसुन्धरा, वसुमती रत्न प्रसविनी आदि कहते हैं। इस प्रकार प्रकृति के सभी तत्त्व हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। हम प्रकृति को पूजनीय मानकर प्रकृति की सेवा यदि करते हैं तो प्रकृति हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी।